आय का चक्रीय प्रवाह

राष्ट्रीय उत्पाद की अवधारण के अध्ययन में हमने देखा की अर्थव्यवस्था में होने वाला व्यय और आय बराबर होते हैं अर्थात अर्थव्यवस्था में उपभोग और उत्पादक इकाइयों का आपस में सम्बन्ध है |यदि किसी अर्थव्यवस्था में व्यापारिक क्षेत्र ही उत्पादक हो और घरेलू और सरकारी क्षेत्र व्यय करने वाली इकाइयाँ हों तो हम अर्थव्यवस्था में देखते हैं कि घरेलू और सरकारी क्षेत्र अपनी उपभोग आवश्यकता व्यापारिक क्षेत्र से पूरा करते हैं तथा व्यापारिक क्षेत्र अपनी साधन सम्बन्धी आवश्यकता घरेलू और सरकारी क्षेत्र से करता है | इस प्रकार एक चक्रीय प्रवाह तैयार होता है जो आय का चक्रीय प्रवाह कहलाता है |

वस्तु विनमय अर्थव्यवस्था में मुद्रा का प्रयोग नहीं होता इस कारण ऐसी अर्थव्यवस्था में वास्तविक प्रवाह होता है अर्थात आर्थिक साधन तथा वस्तुओं और सेवाओं का प्रवाह होगा |प्रत्येक अर्थव्यवस्था में एक तरफ परिवार होता है जो अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए वस्तु और सेवा का उपभोग करता है दूसरी तरफ उत्पादक वर्ग होता है जो वस्तु और सेवा का उत्पादन करता है| इन उत्पादकों को उत्पादन के लिए उत्पादन के साधन की आवश्यकता होती है जो परिवार क्षेत्र द्वारा अपने उपभोग के कीमत के रूप में उत्पादक वर्ग को उपलब्ध करायी जाती है | इस तरह से हम वस्तु विनिमय अर्थव्यवस्था में देखते है कि आर्थिक साधनों का परिवार क्षेत्र से उत्पादक क्षेत्र की तरफ प्रवाह होता है जिसके फलस्वरूप उत्पादक क्षेत्र से परिवार क्षेत्र को वस्तु और सेवा का प्रवाह होता है |

इसी प्रकार जब वर्तमान अर्थव्यवस्थाओं को देखते है जहाँ मुद्रा का प्रयोग होता है| तो परिवार क्षेत्र उपभोग के लिए उत्पादक वर्ग को मूल्य का भुगतान करता है और उत्पादक वर्ग यह प्राप्त मूल्य ,परिवार क्षेत्र से प्राप्त साधनों को मजदूरी,व्याज,लाभ,लगान इत्यादि के रूप में उन्हें वापस कर देता है |यदि सरकार भी इसमें सम्मिलित हो तो वह उपभोग,हस्तान्तारण भुगतान और अनुदान के लिए व्यय करेगी जो उत्पादक वर्ग और परिवार क्षेत्र को प्राप्त होगी लेकिन पुन: सरकार को प्रत्यक्ष और परोक्ष कर के रूप में वापस सरकार प्रवाहित हो जाएगी | इस प्रकार किसी अर्थव्यवस्था में आय का यह प्रवाह चलता रहता है जो अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह कहलाता है|

राष्ट्रीय आय के चक्रीय प्रवाह की व्याख्या के लिए हम कुछ सरल माँडल लेते हैं सबसे पहले एक बंद अर्थव्यवस्था को लेते हैं जहाँ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नहीं हो रहा है

चक्रीय आय प्रवाह का द्विक्षेत्रीय माडल

सरलता के लिए हम सबसे पहले ऐसी अर्थव्यवस्था ले रहे जहाँ केवल दो क्षेत्र उत्पादक और पारिवारिक क्षेत्र है |यहाँ पारिवारिक क्षेत्र ही उत्पादन के साधनों का सम्पूर्ण स्वामित्व रखता है और उत्पादक क्षेत्र को साधन उपलब्ध करवाता है बदले में वह प्रतिफल पाता है | ऊपर व्याख्या में आय का चक्रीय प्रवाह समझा है अब हम इसे एक सरल रेखाचित्र और उदाहरण से समझते हैं -

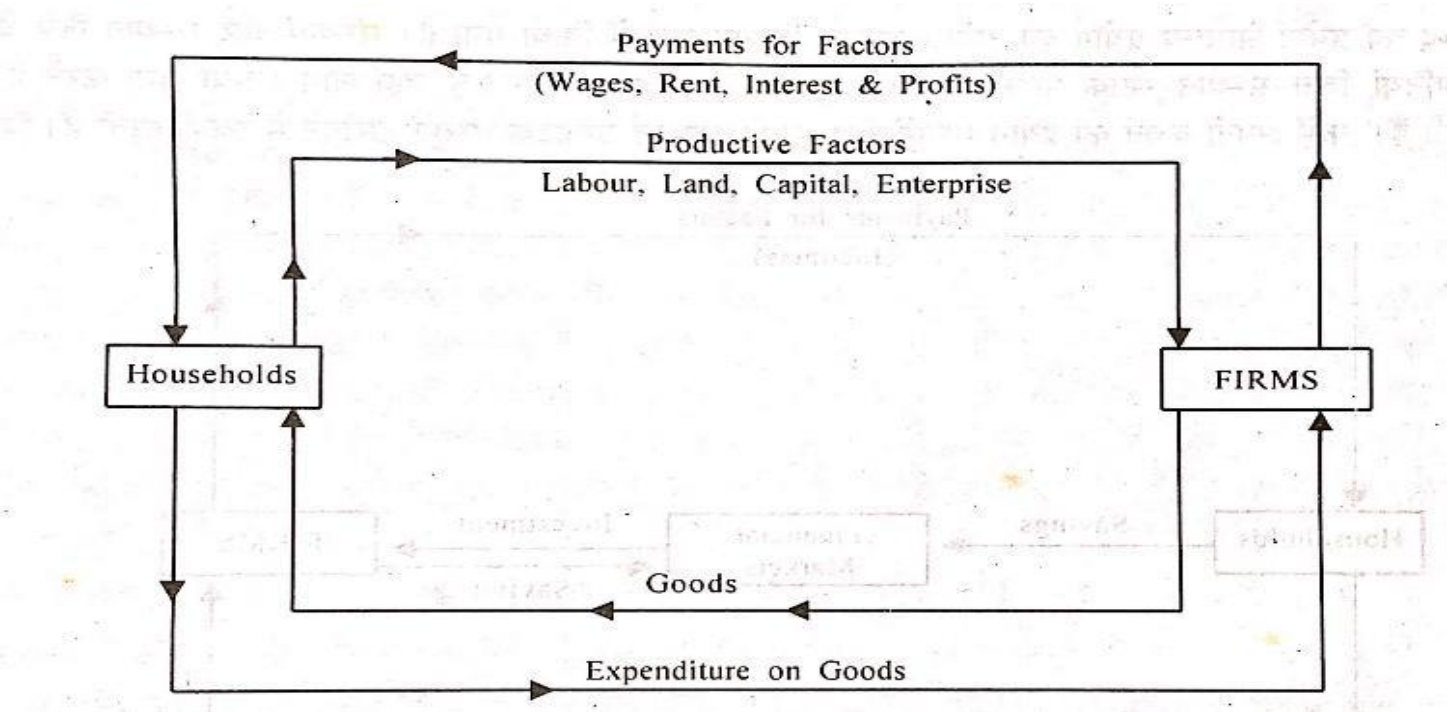

आय का चक्रीय प्रवाह

मान लेते हैं किसी अर्थव्यवस्था में परिवार क्षेत्र उत्पादक क्षेत्र को साधनों(श्रम,भूमि,पूंजी और साहसी) की आपूर्ति करता है बदले में मजदूरी,लगान,व्याज और लाभ प्राप्त करता है | यही प्राप्त आय परिवार क्षेत्र फर्म द्वारा उत्पादित वस्तु पर व्यय किया जाता है और फार्म से वस्तुएं प्राप्त कि जाती है | ऊपर रेखाचित्र में यह प्रवाह तीरों के माध्यम से दिखाया गया है| यदि मान लिया जाय कि मजदूरी ,लगन,व्याज और लाभ के रूप में क्रमशः रु 1500, रु 200,रु 150 और रु 150 प्राप्त होता है और कुल 500 वस्तुएं उत्पादित होती हैं और रु 4 की दर से बेचीं जाती हैं तो हम देखते हैं कि उत्पादित वस्तु का कुल मूल्य 500*4 = रु 2000 होगा जो साधनों को प्राप्त

आय(1500+200+150+150=रु 2000) के बराबर होगी | हम पहले ही जानते हैं कि GNP=समग्र व्यय =साधनों का कुल प्रतिफल |

आय का चक्रीय प्रवाह राष्ट्रीय आय को ही व्यक्त करता है |आय का यह प्रवाह निरंतर रूप से अर्थव्यवस्था में हमेशा होता रहता है लेकिन परिमाण बदलता रहता है क्योंकि राष्ट्रीय आय के घटने-बढ़ने पर आय के चक्रीय प्रवाह में भी संकुचन एवं विस्तार होगा |

इस द्विक्षेत्रीय माँडल में यदि बचत और निवेश भी सम्मिलित हो जाये तो -

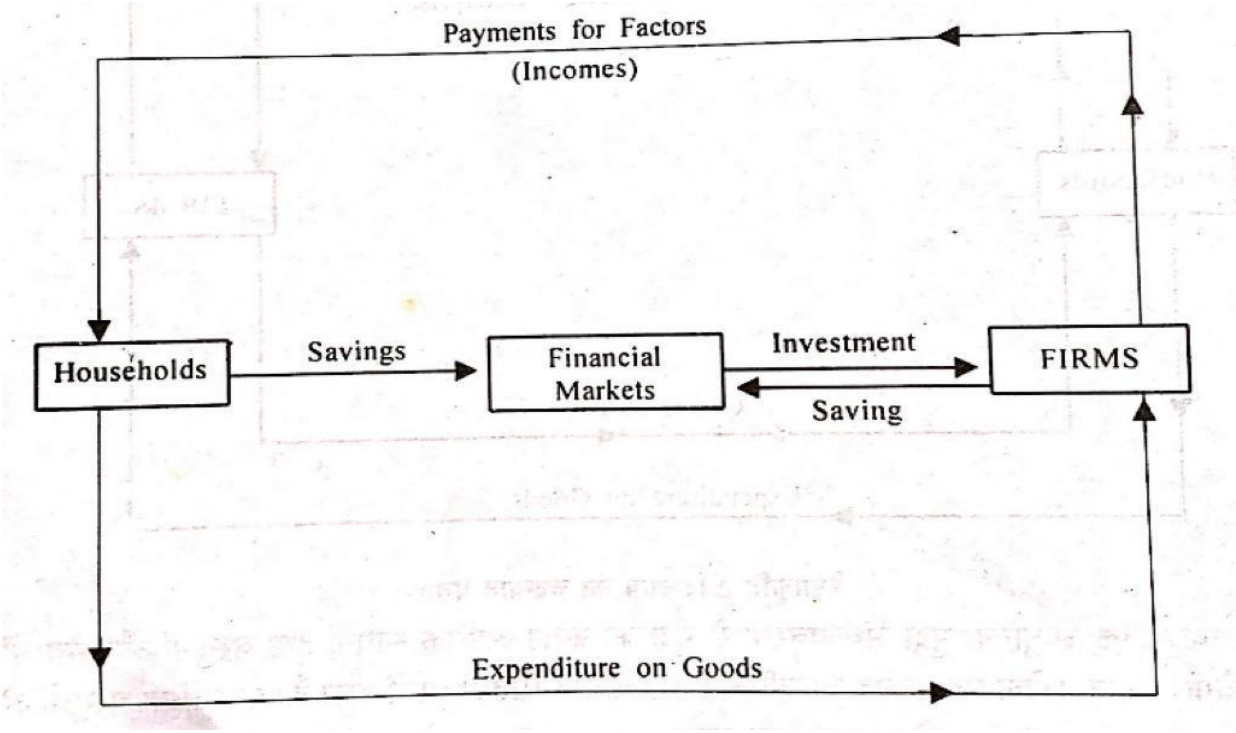

बचत और निवेश के साथ चक्रीय आय प्रवाह

यदि पारिवारिक क्षेत्र आय का पूरा भाग व्यय नहीं करता है बल्कि कुछ बचत करता है ऐसी स्थिति में आय के चक्रीय प्रवाह में व्यय के भाग में कमी होगी| यदि यह कमी उत्पादक वर्ग के विनियोग के माध्यम से पूरी हो जाती है तो आय का चक्रीय प्रवाह का आय प्रवाह व्यय प्रवाह के बराबर हो जायेगा और यह राष्ट्रीय आय के बराबर होगा | इस स्थिति में आय और व्यय के प्रवाह को बराबर होने के लिए आवश्यक है कि अर्थव्यवस्था में नियोजित बचत नियोजित विनियोग के बराबर हो | रेखाचित्र में यह स्थिति प्रदर्शित है | यहाँ GNP=C+S=C+I होगा |

चक्रीय आय प्रवाह का त्रिक्षेत्रीय माडल

यदि उपरोक्त आय प्रवाह चक्र में सरकार को भी सम्मिलित कर लिया जाए | हम जानते हैं सरकार परिवार क्षेत्र और उत्पादक क्षेत्र पर कर लगा कर आय प्राप्त करती है परिणामस्वरूप मुद्रा का प्रवाह परिवार और उत्पादकों से सरकार की तरफ होता है | सरकार अपने उपभोग या कार्य के लिए परिवार क्षेत्र या उत्पादक क्षेत्र पर व्यय भी करती है जिससे आय का प्रवाह सरकार से उत्पादक और परिवार क्षेत्र कि ओर हो जाता है |साथ ही वर्तमान समय में सरकारें हस्तांतरण भुगतान और उपादान भी देती हैं |जैसा दिए गये रेखाचित्र में दिखाया गया है|

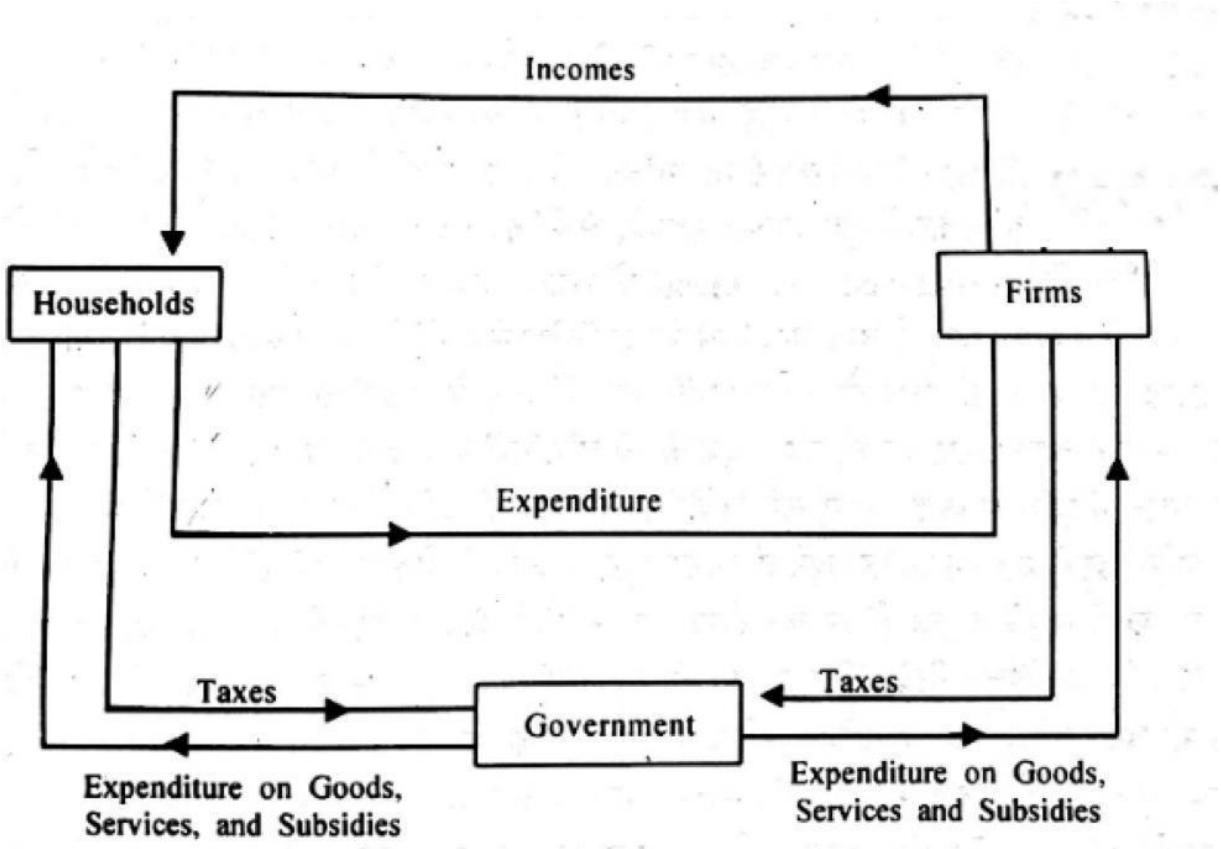

त्रिक्षेत्रीय माडल में आय प्रवाह

खुली अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह

खुली अर्थव्यवस्था से तात्पर्य परिवार क्षेत्र ,उत्पादक वर्ग ,सरकारी क्षेत्र के साथ आयात और निर्यात भी सम्मिलित हो तो आय का चक्रीय प्रवाह संतुलन में होने के लिए विदेशों से प्राप्त आय

तथा विदेशों में हुए व्यय के बराबर होना चाहिए अर्थात भुगतान शेष संतुलन में होना चाहिए | यदि मान लिया जाय उत्पादक वर्ग ही वस्तुओं और सेवाओं का आयात निर्यात करते हैं तो आय का चक्रीय प्रवाह नीचे दिए गये रेखचित्र कि भांति होगा |

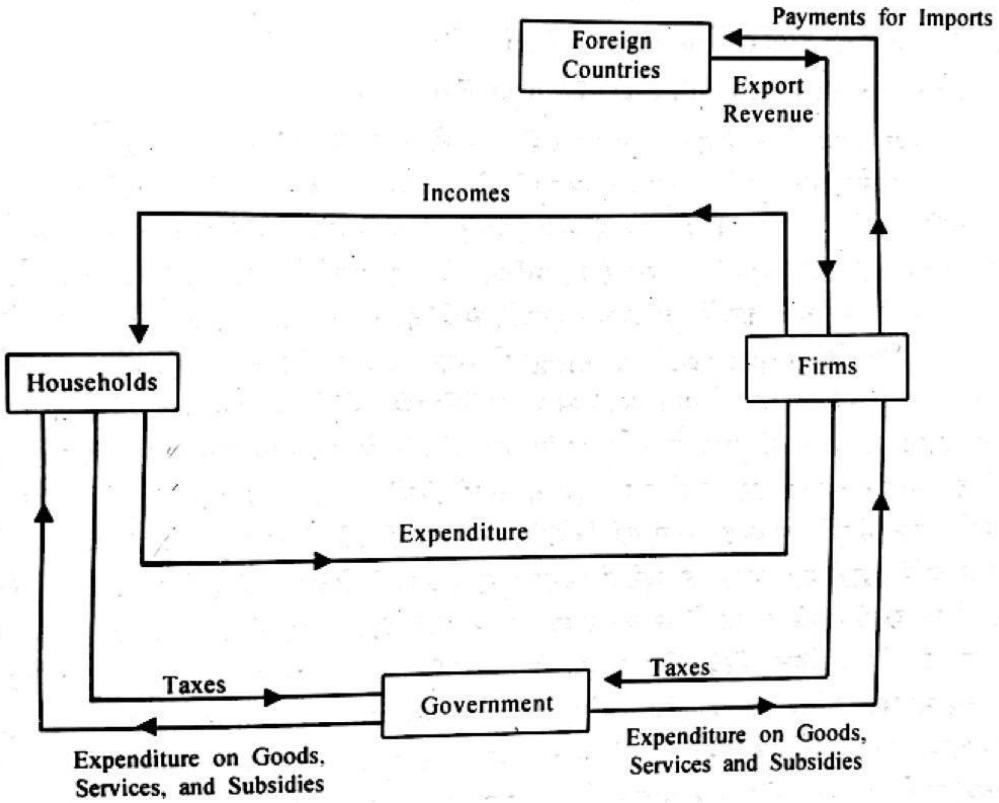

खुली अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह

सम्पूर्ण चक्रीय आय प्रवाह विश्लेषण को चारक्षेत्रीय माडल के विस्तृत रेखाचित्र से भी समझा जा सकता है जो नीचे दिया गया है |अर्थव्यवस्था के चारो क्षेत्रों के बीच किस प्रकार से विनिमय होता है रेखाचित्र में स्पष्ट है| परिवार या घरेलू क्षेत्र का सीधा लेन-देन सरकारी और उत्पादक वर्ग से ही होता है जबकि व्यापारी या उत्पादक वर्ग का लेन-देन सभी क्षेत्रों से होता है | चित्र में हम देख पा रहे कि किस प्रकार बचत पूंजी बाज़ार के माध्यम से पुन: निवेशित होती है जिससे आय के प्रवाह में हुई कमी को पूरा किया जा सके

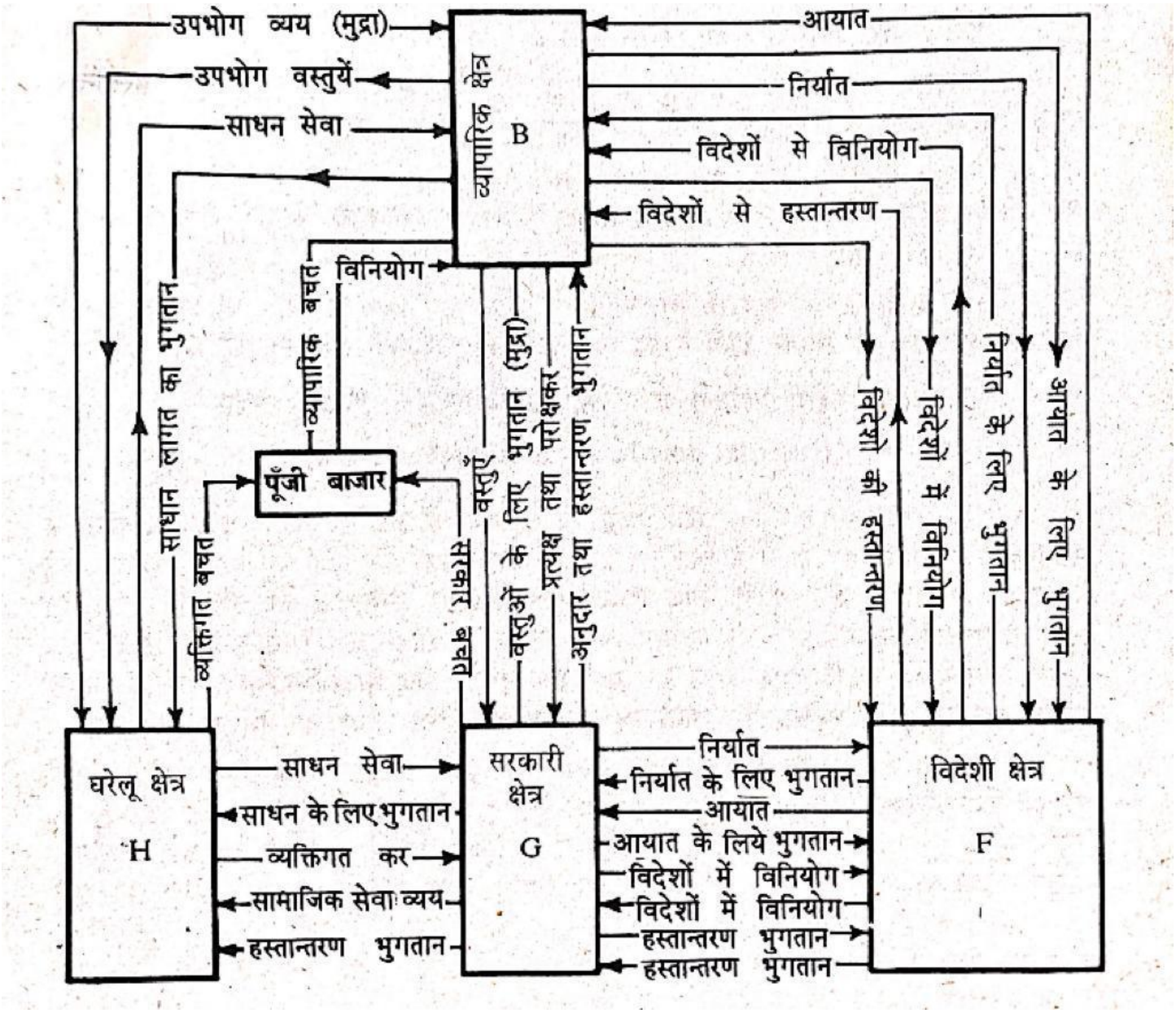

आय के चक्रीय प्रवाह के उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि आय के चक्रीय प्रवाह का विश्लेषण राष्ट्रीय आय लेखांकन तथा समष्टिभावी विश्लेषण का एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण भाग है । इसके विश्लेषण के आधार पर हमें निम्नांकित बातो पर प्रकाश पड़ता है

चक्रीय प्रवाह के विश्लेषण के आधार पर हम राष्ट्रीय उत्पाद तथा उससे सम्बन्धित अनेक समग्र धारणाओं जैसे GNP , NNP , GDP . NI आदि तथा उनके बीच सम्बन्ध का विश्लेषण अधिक सरल तथा प्रभावपूर्ण ढंग से कर पाते है ।

चक्रीय प्रवाह के विश्लेषण के आधार पर हम GNP तथा उसके विभिन्न अवयवों जैसे C , G , I तथा उनके सापेक्षिक अंश का ज्ञान कर पाते है । इस प्रकार के विश्लेषण का आर्थिक नीतियों के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है ।

आय के चक्रीय प्रवाह का विश्लेषण अर्थव्यवस्था में बचत की मात्रा - घरेलू बचत (S) तथा सरकारी बचत (T - G) पर प्रकाश डालता है । इस प्रकार का विश्लेषण अर्थव्यवस्था में बचत के विश्लेषण में अत्यन्त ही उपयोगी है ।

एक खुली अर्थव्यवस्था में विदेशी क्षेत्र से निवल प्रवाह अर्थव्यवस्था की विदेशी विनिमय की स्थिति पर प्रकाश डालता है

आय के चक्रीय प्रवाह से निवल रिसाव के विश्लेषण का समग्र माँग प्रबन्ध विश्लेषण में अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण स्थान है